DPYFE7

पाठ-6

सल्तनतकालीन की संस्कृति

तेरहवीं सदी के प्रारम्भिक वर्षों में दिल्ली सल्तनत की स्थापना को भारत के सांस्कृतिक विकास के नये काल का सूत्रपात माना जा सकता है। भारत आने वाले तुर्क विजेता अनपढ़ और बर्बर लोग नहीं थे। जब तुर्क लोग भारत आये तो उनके पास उनका धर्म इस्लाम था जिसमें उनकी गहरी आस्था थी। शासन प्रबन्ध, विज्ञान, साहित्य और स्थापत्य कला के क्षेत्र में उनका अपना दृष्टिकोण था। दूसरी ओर भारतीयों के भी अपने धर्म, शासन प्रबन्ध, साहित्य, विज्ञान तथा स्थापत्य को लेकर अपने निश्चित विचार थे। इन दोनों के मिलन ने एक मिलीजुली संस्कृति का विकास किया।

सल्तनतकालीन प्रशासन

दिल्ली सल्तनत का प्रारम्भ 1206 ई0 में तथा अन्त 1526 ई0 में हुआ। इस प्रकार भारत में सुल्तानों ने लगभग 300 वर्षों तक शासन किया। सल्तनत काल में सुल्तान का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। सारी राजनैतिक, कानूनी और सैनिक सत्ता उसी में निहित थी। वह राज्य की सुरक्षा और व्यवस्था के लिए जिम्मेदार था। इस तरह वह प्रशासन के लिए भी जिम्मेदार था। सुल्तान ही सेना का प्रधान होता था। कानून और न्याय की व्यवस्था करना भी उसी का दायित्व था। इस कार्य के लिए वह न्यायाधीशों की नियुक्ति करता था। उसके किसी भी पदाधिकारी के अन्याय के खिलाफ उससे सीधे अपील की जा सकती थी। न्याय करना शासक का महत्त्वपूर्ण दायित्व था।

केन्द्रीय शासन

केन्द्रीय शासन में सुल्तान का पद महत्वपूर्ण होता था। सुल्तान ही सेना का सबसे बड़ा अधिकारी होता था। युद्ध और सन्धि के सम्बन्ध में वही निर्णय लेता था। न्याय में भी उसी का निर्णय अन्तिम होता था।

सुल्तान अपनी मदद के लिये मंत्रियों की नियुक्ति करते थे। मंत्रियों का पदासीन रहना या न रहना सुल्तान की इच्छा पर निर्भर करता था। मंत्रियों की संख्या, उनके अधिकार और कर्तव्य समय-समय पर सुल्तान परिवर्तित करते रहते थे।

प्रान्तीय शासन

समस्त देश अनेक प्रान्तों में विभक्त था। पहले इन्हें 'इक्ता' और बाद में 'विलायत' कहा गया। प्रत्येक प्रान्त का अधिकारी गवर्नर होता था, जो 'इक्तादार' और बाद में 'मुक्ति' या 'वली' कहलाता था। उसे सुल्तान नियुक्त करता था। वह सुल्तान के प्रति उत्तरदायी होता था। वह प्रान्त में कानून व्यवस्था बनाए रखता था। उसे सैन्य एवं प्रशासनिक योग्यता के आधार पर नियुक्त किया जाता था। उसके अधीन घुड़सवार, फौजी दस्ते तथा पैदल सैनिक रहते थे। वह आपराधिक मामलों के विवादों में न्यायाधीश का कार्य करता था। वह कर संग्रह में सहायता प्रदान करता था।

स्थानीय शासन

प्रत्येक शिक को परगनों में बाँटा जाता था। गाँवों के समूह को परगना कहते थे। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी। गाँव का मुखिया मुकद्दम या चैधरी कहलाता था। वह समस्त ग्रामीण प्रशासन के लिए उत्तरदायी था। भू-राजस्व निर्धारण एवं वसूली के साथ राजस्व सम्बन्धी सभी कागजात वह रखता था। गाँव की सुरक्षा का कार्य गाँव के चैकीदार का होता था। गाँव के ये तीनों अधिकारी वंशानुगत होते थे। इन्हें वसूले गए भू-राजस्व का एक भाग प्राप्त होता था। गाँव का प्रशासन ग्राम पंचायतों के माध्यम से होता था। इसीलिए मध्यकालीन भारत में ग्रामीण स्तर पर प्राचीन परम्पराएँ यथावत रहीं।

दिल्ली के सुल्तानों ने दिल्ली सल्तनत के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया परन्तु इनके अधिकतर उत्तराधिकारियों के अयोग्य होने के कारण सल्तनत की शक्ति कम होती गई। सल्तनत के विभिन्न भागों में बहुत से इक्तादारों ने नए राज्य बना लिए। उत्तर भारत में सल्तनत के कुछ प्रान्त थे जो बाद में स्वतंत्र राज्य बन गए, जैसे- जौनपुर, बंगाल, मालवा, गुजरात, कश्मीर तथा मेवाड़।

सल्तनत कालीन समाज

सल्तनत काल के शुरुआती दौर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों, रिवाजों एवं विश्वासों में भिन्नता होने से समाज में संघर्ष एवं टकराव की स्थिति पैदा होने लगी। तुर्कों के आगमन ने उत्तर भारत में पर्दा-प्रथा को मजबूत किया। यह प्रथा समाज के ऊँचे तब़कों की प्रतिष्ठा का प्रतीक बन गई। इसका स्त्रियों की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और वे घर में सिमटने लगीं।

बाह्य आडम्बर एवं धन - सम्पत्ति का प्रदर्शन समाज की विशेषता बन गई। इन सबसे समाज में तनाव बढ़ने लगा, जिससे जीवन के नैतिक मूल्यों का ह्रास होने लगा। लोग जीवन के यथार्थ से आँख चुराने लगे। किन्तु लोग बनावटी जीवन से थकने लगे। उन्हें एक ऐसे वातावरण की आवश्यकता हुई जिसमें सामाजिक जीवन के नैतिक मूल्यों को बचाया जा सके। इसी समय भक्तों और सूफी सन्तों का पदार्पण हुआ। इन्होंने लोगों में आपसी समझ पैदा करने की कोशिश की और 'सादा जीवन उच्च विचार' पर बल दिया।

भक्ति आन्दोलन तथा सूफी सन्त

तुर्क और अफगान जो अपने साथ धार्मिक विचार और संस्कृति लाये, उसका भारतीय समाज एवं विचार धारा पर प्रभाव पड़ा। जाति प्रथा की कठोरता, ऊँच-नीच का भेद-भाव तथा बाहरी आडम्बर के कारण भारतीय समाज में कुछ दोष आ गये। अतः सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और समाज को सुसंगठित करने के लिए कुछ समाज सुधारकों ने जनता में परस्पर प्रेम तथा सद्भाव को बढ़ाने का प्रयास किया। इन्होंने धार्मिक कर्मकाण्डों की अपेक्षा भक्ति-भाव से ईश्वर की उपासना करने को श्रेष्ठ बताया। इस प्रकार धार्मिक

सहिष्णुता की भावना को बल मिला। सन्तों एवं समाज सुधारकों द्वारा चलाया गया इस प्रकार का आन्दोलन भक्ति आन्दोलन के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन भक्त संतों में कबीर, चैतन्य महाप्रभु, गुरुनानक, दादू, रैदास, तुकाराम, रामानंद, बल्लभाचार्य, मीराबाई आदि प्रसिद्ध हैं।

कबीर

काशी (वाराणसी) में एक जुलाहे, बुनकर परिवार में कबीर का पालन-पोषण हुआ। कबीर निरंकार परमेश्वर में विश्वास रखते थे। कबीर की प्रमुख रचनाएँ थी- साखी, सबद, रमैनी।

मीराबाई- ये मेड़ता के राठौर राणा रतन सिंह की पुत्री थी। मीराबाई कृष्ण की उपासना में भजन गाया करती थी।

गुरु नानक देव

1469 ई0 में पंजाब के तलवंडी नामक स्थान में गुरुनानक का जन्म हुआ था। इन्होंने सिख धर्म धर्म चलाया तथा एकेश्वरवाद का उपदेश दिया।

चैतन्य महाप्रभु ने बाह्य आडम्बर तथा कर्मकाण्ड का विरोध किया। रविदास ने लोगों को शिक्षा दी कि भक्ति से ही मनुष्य मोक्ष पा सकता है। रामानन्द ने शुद्ध आचरण एवं भक्ति पर विशेष बल दिया। दादू, तुकाराम जैसे सन्तों ने भी अपने विचार द्वारा भक्ति आंदोलन को गति प्रदान की।

भक्ति सन्तों ने लोगों के बीच यह भावना फैलाई थी कि ईश्वर को पाने के लिए सच्चे दिल से प्रेम करना ही एक मात्र तरीका है। उन्होंने आम लोगों की बोली में कई सुन्दर गीतों की रचना की जिसे भक्त लोग मगन होकर गाते थे। वे ऊँच-नीच, जाति-पाति के खिलाफ थे। उनका मानना था कि सभी मनुष्य ईश्वर की नजर में समान है और हिन्दू तथा मुसलमान दोनों का एक ही ईश्वर है। ईश्वर को पाने का रास्ता भी एकसमान है।

चैतन्य महाप्रभु

इन्हीं भक्त संतों की तरह कई मुसलमान संत भी थे जो सूफी सन्त कहलाए। इन सूफी सन्तों मंे अजमेर के ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया, पंजाब के बाबा फरीद, बहुत जाने माने सूफी संत थे।

भक्त संतों और सूफी संतों के विचार आपस में बहुत मिलते-जुलते थे। सूफियों ने इस बात पर जोर दिया कि सच्चे दिल से अल्लाह को प्रेम करना और अपने बुरे कामों पर पश्चाताप करना अल्लाह को पाने का सही तरीका है। सूफी मत के अनुयायी एक ईश्वर में विश्वास करते थे। शांति, अहिंसा एवं सहिष्णुता एवं मानवता के प्रति प्रेम की भावना में भी उनका अटूट विश्वास था। सूफी सन्तों से हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही अत्यधिक प्रभावित हुए।

लल्ला देव कश्मीर की विधवा ब्राह्मण औरत थीं। कई सूफी संत उसे अपना पीर या गुरु मानते थे। वह कहती थीं-

”शिव सब जगह मौजूद हैं, सब में मौजूद हैं फिर हिन्दू और मुसलमान में फर्क मत करो। अगर तुम समझदार हो तो अपने आप को समझो। यही ईश्वर की सही समझ है।“

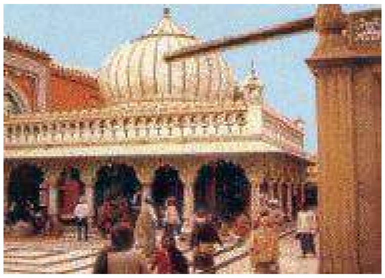

निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, दिल्ली

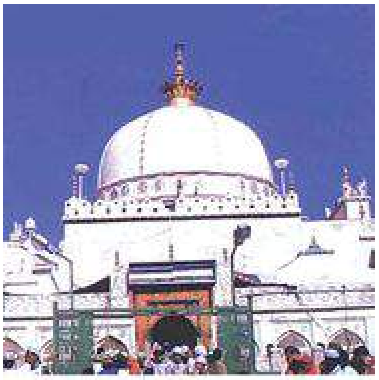

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह, अजमेर

साहित्य

सल्तनत काल में देश के बहुत से भागों में फारसी राजभाषा रही। अतः बहुत सी भारतीय भाषाओं पर फारसी का प्रभाव पड़ा और फारसी के बहुत से शब्द भारतीय भाषाओं में

आ गए। सल्तनत काल में दिल्ली, अरबी व फारसी साहित्य के विद्वानों का केन्द्र बन गई थी। महमूद गजनवी के समय अलबरुनी और फिरदौसी नामक प्रसिद्ध विद्वान तथा कवि थे। मंगोलों के डर से मध्य एशिया के अनेक विद्वानों और साहित्यकारों ने भागकर दिल्ली के सुल्तानों के दरबार में शरण ली थी। भारत में फारसी साहित्य का महान विद्वान अमीर खुसरो था। उसने भारत के बारे में बहुत कुछ लिखा जिससे उसका भारत के प्रति प्रेम झलकता है।

इस समय साहित्य के नाम पर यशोगान और धार्मिक पुस्तकों की ही रचना हुई। इस श्रेणी में नरपति-नाल्ह का बीसल देव रासो तथा खुमानरासो उल्लेखनीय है। अमीर खुसरो ने हिन्दी में भी पद रचना की थी।

भक्ति आन्दोलन के सन्तों जैसे गोरखनाथ, कबीर आदि ने ईश्वर स्तुति में गीतों की रचना की थी। इस काल में सुप्रसिद्ध प्रेमाख्यान तथा ऐतिहासिक महाकाव्य पद्मावत की रचना महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी ने की।

स्थापत्य कला

ईरानी व तुर्क कारीगर जब भारत आए तो अपने साथ इमारत बनाने की एक नई विधि भी लाए। सल्तनतकालीन इमारतों की तीन खास बातें थीं- मेहराब, गुम्बद और मीनारें जो उनकी सभी इमारतों में देखी जा सकती है। कुछ इमारतों में कुरान की आयतें भी लिखी गयीं हैं।

मिली-जुली शैलियाँ

ईरानी व तुर्क कारीगरों से ये बातें भारत के कारीगरों ने सीखीं। उन कारीगरों ने भी भारत के कारीगरों के हुनर सीखे। मंदिरों में मेहराबें व गुम्बद बनने लगे और कई मस्जिदों में पत्थर पर पत्थर रखकर तराशे हुए खम्भे बनने लगे।

आपके आस-पास भी कुछ मंदिर व मस्जिद होगें क्या उनमें ऐसी कुछ विशेषताएँ आपको देखने को मिलती हैं ? इनकी सूची बनाइए।

चित्रकला और संगीत

सल्तनत काल में बारीक और छोटे-छोटे चित्र बनाये जाते थे। कलाकारों को दरबार में आश्रय मिला था। कभी-कभी वे पुस्तक में वर्णित घटनाओं के चित्र बनाते थे।

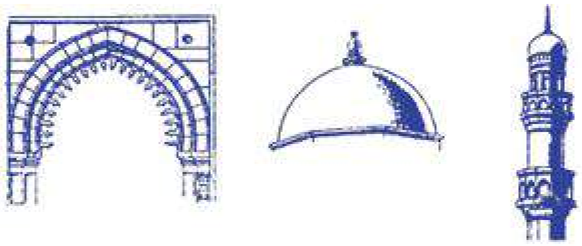

मेहराब गुम्बद मीनार

भारतीय संगीत पर फारस और अरब की संगीत शैली का प्रभाव पड़ा। सितारए सारंगी और तबला जैसे वाद्य यंत्रों की लोकप्रियता बढ़ गयी। कुछ सूफी सन्तों ने संगीत में विशेष रुचि दिखायी। उनका विश्वास था कि भक्ति.संगीत भी ईश्वर के निकट पहुँचने का एक रास्ता है। इससे संगीत के नये रूपों जैसे कव्वाली को लोकप्रिय होने में बड़ी सहायता मिली।

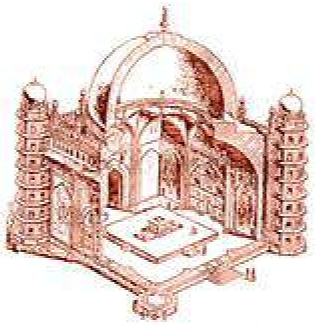

गुम्बद का आन्तरिक भाग

अस्त्र शस्त्र का विकास

मध्यकालीन समय में सर्वोत्तम तलवारें वाराणसी (बनारस) और सौराष्ट्र में बनती थीं। उसके बाद लाहौर, सियालकोट, मुल्तान, गुजरात तथा गोलकुण्डा के प्रान्त भी इसके लिए मशहूर हुए। राजस्थान एवं गुजरात में निर्मित जमधार, छूरे, धनुष तथा तीरों की बड़ी माँग थी।

सियालकोट तथा मेवाड़ की तोड़ेदार बन्दूक सर्वोत्तम होती थी। तोड़ेदार बन्दूकों के अलावा लोहे का उपयोग सब प्रकार के कवच, ढाल, हथियार, बन्दूक तथा तोप के गोले आदि में होता था।

चिकित्सा एवं खगोल शास्त्र

सल्तनत काल में आयुर्विज्ञान तथा खगोल विद्या जैसे कुछ विज्ञान विषयों में अनुसंधान को सुल्तानों तथा अमीरों का संरक्षण प्राप्त था। वे इन कार्यों के लिए प्रोत्साहन देते थे।

बरनी ने अपनी तारीख-ए-फिरोजशाही में चिकित्सकों और खगोल शास्त्रियों की एक लम्बी तालिका प्रस्तुत की है। मौलाना बदरुद्दीन, मौलाना सदरुद्दीन तथा अजीमुद्दीन मध्यकालीन युग के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। मच्छेन्द्र प्रसिद्ध वैद्य थे और जोग मशहूर शल्य चिकित्सक थे। मध्यकाल में ऐसे प्रमाण मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि देश में अनेक जर्राह या शल्य चिकित्सक थे। वे केवल शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) ही नहीं करते थे, बल्कि कृत्रिम अंग भी बनाकर लगा सकते थे। वे काटकर पथरी निकाल देते थे। मोतियाबिन्द को समाप्त कर डालते थे।

छूरा तलवार कवच

कृषि

देश की आबादी में ज्यादातर लोग किसान थे। वे कड़ी मेहनत करते थे। देश के विभिन्न भागों में आए दिन अकाल पड़ने और युद्ध होने से किसानों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उस समय किसानों का जीवन स्तर ऊँचा नहीं था। गाँव के अधिकारी कभी-कभी अपने पद का दुरुपयोग करते थे और साधारण किसानों को अपने हिस्से की भी मालगुजारी (राजस्व) अदा करने के लिए मजबूर करते थे।

व्यापार व उद्योग

मुस्लिम विजय ने देश के उद्योग तथा वाणिज्य व्यापार में बाधा नहीं डाली। गाँव तथा शहरांे में कारीगरों एवं शिल्पियों ने अपने पुराने पेशे को बरकरार रखा था। उनके औजार भी वही थे। कुछ विशेष प्रकार के नये काम करने वाले कारीगर वर्ग भी उत्पन्न हुए, जैसे बर्तन पर कलई करने वाले, घोड़े की नाल व रकाब बनाने वाले, कागज़ बनाने वाले आदि।

इसके अतिरिक्त कई शाही कारखाने भी थे, जो फारस देश की तकनीक के अनुसार दिल्ली के सुल्तानों द्वारा स्थापित किये गये थे। इन कारखानों में राज्य, राजपरिवार तथा दरबारी लोगों की जरूरत की चीजें बनायी जाती थीं।

मुद्रा के क्षेत्र में भी सुधार हुए। सुल्तानों ने चाँदी के टंके और ताँबे के जीतल नामक मुद्राएँ चलायीं। इसी के साथ व्यापार का विकास शुरू हुआ जिससे शहर और शहरी जीवन का और विकास हुआ। बंगाल और गुजरात के शहर अपने उत्तम कपड़ों और सोने तथा चाँदी के काम के लिए प्रसिद्ध थे। बंगाल का सोनार गाँव और ढाका कच्चे रेशम और मलमल के लिए विख्यात थे।

वस्त्र निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण तकनीकी परिवर्तन 13वीं-14वीं शताब्दी में मुसलमानों द्वारा भारत में लाये चरखे द्वारा हुआ। चरखे का चलन आरम्भ होने से कपड़े के उत्पादन में बहुत सुधार हुआ। लाल सागर और फारस की खाड़ी के आस-पास के देशों के साथ होने वाले व्यापार में भारतीय कपड़े की धाक पहले ही जम चुकी थी। पेड़-पौधों और खनिज स्रोतों से प्राप्त विभिन्न रंगों से रंगाई का कार्य किया जाता था। उस काल में भारतीय कपड़े चीन को भी निर्यात किये जाते थे।

इस काल में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार जल और थल दोनों मार्गों से किया जाता था। भारत कुछ वस्तुओं का निर्यात करता था। इसमें चर्म व धातु से बनी वस्तुएँ तथा फारसी डिजाइन आधारित गलीचे प्रमुख थे।भारत पश्चिमी एशिया से उच्च कोटि के कुछ कपड़े (साटन आदि), काँच के बर्तन, बहुमूल्य धातुएँ, घोड़े तथा चीन से कच्चा रेशम और चीनी मिट्टी के बर्तन आयात करता था।

यातायात

दिल्ली सल्तनत के सुदृढ़ होने से यातायात एवं संचार का विकास हुआ। उस समय आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों का ज्ञान नहीं था। लोग परिवहन के साधनों के रूप में कुलियों, जानवरों तथा चक्के वाली गाड़ियों का प्रयोग करते थे। परम्परागत बैलगाड़ी का इस्तेमाल उन दिनों खूब होता था। बैलों पर काठी के स्थान पर गद्दे रखकर माल ढोया जाता था। सवारी के लिए घोड़े, टट्टू, खच्चर और कभी कभी गधों, ऊँटों का इस्तेमाल भी किया जाता था। नदियों में नावों तथा सागर में पाल वाले जलयानों का उपयोग किया जाता था।

शब्दावली

सूफी - ईश्वर की भक्ति उपासना में व्यक्तिगत प्रेम-भावना पर अधिक बल देने वाले मुसलमान संत।

पीर - सूफी सम्प्रदाय के धर्म उपदेशक

जर्राह - शल्य चिकित्सक (चीर-फाड़ करने वाला डॉक्टर या सर्जन)।

जीतल - सल्तनत काल में प्रचलित ताँबे का सिक्का।

आयात - बाहर के देशों में बनी वस्तुओं को अपने देश में मँगाना।

निर्यात - अपने देश में बनी वस्तुओं को दूसरे देशांे में भेजना।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**

(क) सल्तनत काल के फारसी तथा हिन्दी के कवियों और लेखकों के नाम लिखिए।

(ख) सल्तनत काल में बनी प्रमुख इमारतों की विशेषताएं लिखिए।

(ग) सूफी मत की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

(घ) भक्ति काल के प्रमुख संतों के नाम बताइए।

(ङ) सल्तनत काल में उद्योग एवं व्यापार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

(च) सल्तनत काल में कहाँ की तलवारें प्रसिद्ध थीं ?

(छ) सल्तनत कालीन प्रशासन का वर्णन कीजिए।

(ज) सन्त एवं समाज सुधारकों ने भक्ति आंदोलन क्यों चलाया।

(छ) दिल्ली सल्तनत में सुल्तान का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। क्यों?

2. **निम्नलिखित वाक्यों के समक्ष सत्य अथवा असत्य लिखिए-**

क. सल्तनत काल में सुल्तान का स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। ....

ख. युद्ध में सेना और धन की आवश्यकता नहीं होती है। ....

ग. सुल्तान सेना का सबसे बड़ा अधिकारी होता था। ....

घ. पद्मावत की रचना मलिक मोहम्मद जायसी ने की थी। ....

ड. सल्तनत काल में किसानों का जीवन स्तर बहुत ऊँचा था। ....

3. टिप्पणी लिखिए-

क. टंका और जीतल

ख. इक्तादार

ग. मुकद्दम या चैधरी

4. सही जोड़े मिलाइए-

क. मच्छेन्द्र	प्रसिद्ध विद्वान
ख. जोग	चिकित्सक
ग. बरनी	सूफी सन्त
घ. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती	शल्य चिकित्सक

प्रोजेक्ट कार्य

स्थापत्य कला की दृष्टि से सल्तनत काल में बनी इमारतों की विशेषताएँ गुम्बद, मीनार व मेहराब हैं। इनके चित्र अपनी अभ्यास-पुस्तिका में बनाकर रंग भरिए।